चतुर्थः पाठः

मानो हि महतां धनम्

प्रस्तुत पाठ महर्षि वेदव्यास रचित **महाभारत** के उद्योग पर्व के 131, 134 अध्यायों से संकलित है। इसमें क्षात्र धर्म के कर्त्तव्यों का उपदेश देती हुई कुन्ती के पुरातन इतिहास का उल्लेख करते हुए विदुरा द्वारा सिन्धुराज से युद्ध में परास्त अपने पुत्र को, कायरता का त्याग कर, अपने स्वाभिमान को पुनः प्राप्त करने का उपदेश दिया गया है।

इस पाठ के श्लोकों में मानव के कुल के उत्थान, आत्मबल, परोपकार की महिमा एवं उसके उत्कृष्ट स्वरूप का वर्णन है।

कुन्ती उवाच -

क्षात्रधर्मरता धन्या विदुरा दीर्घदर्शिनी।
विश्रुता राजसंसत्सु श्रुतवाक्या बहुश्रुता॥1॥

विदुरा नाम वै सत्या जगर्हे पुत्रमौरसम्।
निर्जितं सिन्धुराजेन शयानं दीनचेतसम्।
अनन्दनमधर्मज्ञं द्विषतां हर्षवर्धनम्॥2॥

उत्तिष्ठ हे कापुरुष
मा शेष्वैवं पराजितः।
अमित्रान्नन्दयन्सर्वा-
न्निर्मानो बन्धुशोकदः॥3॥

उद्भावयस्व वीर्यं वा
तां वा गच्छ ध्रुवां गतिम्।
धर्मं पुत्राग्रतः कृत्वा
किं निमित्तं हि जीवसि॥4॥

कुरु सत्त्वं मानं च विद्धि पौरुषमात्मनः।
उद्भावय कुलं मग्नं त्वत्कृते स्वयमेव हि।।5।।

यस्य वृत्तं न जल्पन्ति मानवा महदद्भुतम्।
राशिवर्धनमात्रं स नैव स्त्री न पुनः पुमान्।।6।।

य आत्मनः प्रियसुखे हित्वा मृगयते श्रियम्।
अमात्यानामथो हर्षमादधात्यचिरेण सः।।7।।

पुत्रः उवाच-
किं नु ते मामपश्यन्त्याः पृथिव्या अपि सर्वथा।
किमाभरणकृत्यं ते किं भोगैर्जीवितेन वा।।8।।

माता उवाच -
यमाजीवन्ति पुरुषं सर्वभूतानि संजय।
पक्वं द्रुममिवासाद्य तस्य जीवितमर्थवत्।।9।।

स्वबाहुबलमाश्रित्य योऽभ्युज्जीवति मानवः।
स लोके लभते कीर्त्तिं परत्र च शुभां गतिम्।।10।।

कुन्ती उवाच -
सदश्व इव स क्षिप्तः प्रणुन्नो वाक्यसायकेः।
तच्चकार तथा सर्वं यथावदनुशासनम्।।।11।।

(उद्योग पर्व, 131, 134 अध्याय)

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

क्षात्रधर्मरता - क्षात्रस्य धर्मः, क्षात्रधर्मः तस्मिन् रता, तत्पुरुष समास, क्षात्र धर्म का पालन करने वाली।

दीर्घदर्शिनी - दीर्घं द्रष्टुम् शीलं यस्याः सा, उपपद तत्पुरुष, भविष्य का चिन्तन करने वाली।

विश्रुता - प्रसिद्ध।

राजसंसत्सु - राज्ञः संसत्सु, सप्तमी तत्पुरुष राज्य सभाओं में।

श्रुतवाक्या - श्रुतानि वाक्यानि यया सा, न्याय पारंगत निपुण।

बहुश्रुता - बहु श्रुतं यया सा, विदुषी

सत्या	–	सत्य भाषण करने वाली।
जगर्हे	–	गर्ह्, लिट् लकार प्र.पु. ए.व., निन्दा की।
औरसम्	–	उरसः जातम्, सगे बेटे को।
निर्जितम्	–	परास्त, हारे हुए।
शयानम्	–	शीङ् शानच्, द्वि., ए.व., सोते हुए, लेटे हुए।
दीनचेतसम्	–	दीनं चेतः यस्य सः तम् बहुव्रीहि, उदास हृदय वाले।
अनन्दनम्	–	न नन्दनम्, दूसरों को अप्रसन्न करने वाले।
अधर्मज्ञम्	–	धर्मं जानाति धर्मज्ञः न धर्मज्ञः अधर्मज्ञः तम्, धर्म को न जानने वाले को।
द्विषताम्	–	द्विष् + शतृ षष्ठी. ब.व., शत्रुओं के।
हर्षवर्धनम्	–	हर्षं वर्धयति तम्, प्रसन्न करने वाले।
शेष्व	–	शीङ् + लोट् लकार, म.पु. ए.व., सोओ।
अमित्रान्	–	शत्रुओं को।
नन्दयन्	–	नन्द् + णिच् + शतृ, प्र.पु. ए.व., प्रसन्न करते हुए।
निर्मानः	–	निर्गतो मानो यस्य सः, सम्मान रहित।
उद्भावयस्व	–	उद् + भू + णिच्(प्रेरणार्थक) लोट्लकार म.पु. ए.व., जानो, ज्ञात करो, प्रकट करो।
विद्धि	–	विद् + लोट्लकार, म.पु. ए.व.।
मग्नम्	–	मस्ज् + क्त, द्वि. ए.व., डूबे हुए (अवनत हुए कुल) को।
राशिवर्धनमात्रम्	–	मात्र संख्या बढ़ाने वाले।
शौर्यम्	–	शूर + ष्यञ्, शौर्यम् तस्मिन्, वीरता में।
हित्वा	–	हा + क्त्वा, छोड़कर।
मृगयते	–	खोजता है।
आदधाति + अचिरेण	–	उत्पन्न करता है, धारण करता है, शीघ्र।
अपश्यन्त्याः	–	न पश्यन्त्या, दृश + शतृ, स्त्री. षष्ठी ए.व., न देखते हुए।
आभरणकृत्यम्	–	आलंकारिक कार्य।
आजीवन्ति	–	आश्रय लेते हैं, सहारा लेते हैं।
पक्वम्	–	पच् + क्त, पका हुआ।

आसाद्य	–	आ + सद् + णिच् + क्त्वा >ल्यप्, पाकर।
अर्थवत्	–	अर्थ + मतुप्, सफल।
अभ्युज्जीवति	–	जीवित रहता है।
परत्र	–	परलोक में।
सदश्वः	–	अच्छा घोड़ा।
प्रणुन्नः	–	प्र + नुद् + क्त,पु., प्र., ए.व., प्रेरित किया हुआ।
वाक्यसायकेः	–	वाणी के बाणों से।
तच्चकार	–	तत् + चकार, वह (सब) किया।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं संस्कृतेन देयम्

(क) मानो हि महतां धनम् इत्ययं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् संकलितः?
(ख) विदुरा कुत्र विश्रुता आसीत्?
(ग) विदुरायाः पुत्रः केन पराजितः अभवत्?
(घ) कः स्त्री पुमान् वा न भवति?
(ङ) कः अमात्यानां हर्षं न आदधाति?
(च) अपुत्रया मात्रा किम् आभरणकृत्यं न भवति?
(छ) कस्य जीवितम् अर्थवत् भवति?

2. 'य आत्मनः ..... अचिरेण सः' अस्य श्लोकस्य आशयं हिन्दी भाषया स्पष्टीकुरुत

3. रिक्तस्थानानाम् पूर्तिः विधेया

(क) विदुरा औरसम् पुत्रं ....।
(ख) हे कापुरुष .... मा शेष्व।
(ग) त्वत्कृते स्वयमेव मग्नं .... उद्भावय।
(घ) यः प्रियसुखे .... श्रियम् मृगयते।
(ङ) मामपश्यन्त्याः .... अपि सर्वथा किम्?
(च) सर्वभूतानि .... यमाजीवन्ति।
(छ) स यथावत् .... चकार।

4. **अधोलिखितानां शब्दानां विलोमान् लिखत**

   विश्रुता, सत्या, अधर्मज्ञम्, अमित्रान्, कापुरुषः, अचिरेण, आसाद्य।

5. **पञ्चभिः वाक्यैः विदुरायाः चरित्रम् वर्णयत**

6. **'यमाजीवन्ति .... जीवितमर्थतत्' अस्य श्लोकस्य अन्वयं लिखत**

7. **अधोलिखितपदानां संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत**

   विश्रुता, शयानम्, द्विषताम्, गतिम्, पक्वम्, क्षिप्तः।

योग्यताविस्तारः

अधोलिखितानां नारीचरित्राणां चरितमनुसन्धाय विदुरायाश्चरित्रेण तेषां तुलनां कुरुत-गार्गी, शकुन्तला, सावित्री।